तुलसीदास

कवि–परिचय

हिन्दी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ महाकवि तुलसीदास जी सगुण काव्य धारा में राम के उपासक थे। गोस्वामी तुलसीदास का जन्म संवत् 1554 विक्रमी (सन् 1497 ई0)में उत्तरप्रदेश के बांदा जिले में राजापुर नामक गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम आत्माराम और माता का नाम हुलसी था। बाल्यावस्था में ही माता–पिता का देहान्त हो जाने के कारण गुरु नरहरिदास ने ही इनका लालन–पालन किया।

श्रीराम के प्रति अनन्य भक्ति ने रामचरित मानस जैसे दिव्य ग्रन्थ की रचना कवि द्वारा करवाई। रामचरितमानस के अतिरिक्त तुलसीदास जी की अन्य रचनाओं में विनयपत्रिका, कवितावली, गीतावली, दोहावली, जानकी मंगल और बरवै रामायण है। इनकी भक्ति की सबसे प्रधान विशेषता उनकी सर्वांगपूर्णता है। उसमें धर्म और ज्ञान का सुन्दर समन्वय है। इनके राम परमब्रह्म होते हुए भी गृहस्थ थे। इन्होंने पारिवारिक सम्बन्धों के आदर्श चरित्र को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। इन्हीं सब विशेषताओं के कारण यह कहा गया है कि–

''कविता कर के तुलसी न लसै।
कविता लसि पा तुलसी की कला।।''

पाठ–परिचय

प्रस्तुत कविता तुलसीदासजी द्वारा रचित कवितावली के अयोध्याकांड का अंश है जो हृदयस्पर्शी एवं चित्रात्मक है। कवि ने सीता, राम व लक्ष्मण के वन गमन का वर्णन रोचक व सहज रूप से किया है। पथ पर महिलाओं का उलाहना, सीताजी द्वारा उनकी जिज्ञासाओं का शमन करना, राम का मुनिवेष धारण कर पदवेष बिना कंटीले पथ पर चलना, आदि भावों का शब्द चित्र हृदयस्पर्शी बन पड़ा है।

**** ****

वन गमन
सवैया

पुर तें निकसी रघुवीर–वधू, धरि धीर दये मग में डग द्वै।
झलकीं भरि भाल कनी जल की, पुट सूखि गए मधुराधर वै।।
फिरि बूझति है ''चलनो अब केतिक, पर्न कुटी करिहौ कित ह्वै?''।
तिय की लखि आतुरता पिय की अखियाँ अति चारु चलीं जल च्वै।।1।।

पुरतें निकसी रघुबीरबधू धरि धीर दए मगमें डग द्वै।
झलकीं भरि भाल कनीं जलकी, पुट सूखि गए मधूराधर वै॥
फिरि बूझति है, चलनो अब केतिक, पर्नकुटी करिहौ किते ह्वै?
तियकी लखि आतुरता पियकी अँखियाँ अति चारु चलीं जल च्वै॥

कठिन शब्दार्थ– रघुवीर बधू– सीता। धीर– धीरज,धैर्य। मग–मार्ग। डग–कदम। भाल– मस्तक। कनी–बूंदे, किनकी। जल– यहां अर्थ है (पसीना) पुट– संपुट, दोनों होट। मधुराधर–सुदंर होठ। बूझति– पूछती है। केतिक–कितना। पर्नकुटी–पत्तों आदि से बनी कुटिया। तिय–स्त्री, पत्नी। आतुरता– कष्ट, थकान। चारू– सुदंर। चली जल च्वै– आँसू टपकाने लगी।

संदर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत छंद हमारी पाठ्य पुस्तक प्रज्ञा प्रवाह में संकलित कविवर तुलसी की रचना बनगमन से अवतरित है। इसमें कवि ने सीता के शरीर की कोमलता केसाथ उनकी सरलता के दर्शन कराए हैं। राम का पत्नी के प्रति गहरा प्रेमभाव भी मन को छूने वाला है।

व्याख्या– अयोध्या की राजवधू, कोमलांगी सीता, वन जाने के लिए राम के साथ नगर से बाहर निकलीं। उन्होंने बडे धीरज के साथ कठोर भूमि पर दो कदम बढाए थे कि थकान के कारण उनके मस्तक पर पसीने की बूँदे झलकने लगी। उनके मधुर और कोमल होठ कुम्हला गए। वे राम से पूछने लगी ’ अभी कितना और चलना होगा। आप पत्तों की कुटिया कहाँ और कब बनाऐगें। राज सुखों मे पली उस बेचारी राजवधू को क्या पता था कि वन क्या होता है। कठोर भूमि पर नंगे पैर चलने से कितना कष्ट होता है। राम ने जब प्रिय पत्नी की थकान और आतुरता से भरी दशा देखी तो उनके सुंदर नेत्रों से आँसू टपकने लगे। राम सोच रहे होगें कि बनवास का आदेश तो उनके लिए हुआ था और सीता पत्नीव्रत का पालन करने को ऐसा कष्ट सह रही थी।

जलको गए लक्खनु, हैं लरिका परिखौ, पिय! छाँह घरीक ह्वै ठाढ़े।
पोंछि पसेउ बयारि करौं, अरु पाय पखारिहौं भूभुरि-डाढ़े॥
तुलसी रघुबीर प्रियाश्रम जानि कै बैठि बिलंब लौं कंटक काढ़े।
जानकीं नाहको नेहु लख्यो, पुलको तनु, बारि बिलोचन बाढ़े॥

कठिन षब्दार्थ – लक्खन– लक्ष्मण। लरिका– लडका। परिखौ–प्रतीक्षा कीजिए, बाट देखिए। छाँह– छाया। घरीक –एक घडी, थोडी देर तक । ह्वै– होकर। ठाढै– खडे। पसेऊ–पसीना। बयार–हवा। पखारी हौं –स्वच्छ करूंगी। भूभूरि– गर्म रेत। डाढे–झूलसे हुए। स्रम–थकान। विलंब लौं–देर तक । कंटक – काँटे। काढे– निकालें । नाह– नाथ ,पति। नेह– प्रेम। लख्यौ–देखा। पुलको– पुलकित या रोमांचित हो गया। तन –शरीर। वारि– जल ,आँसू। विलोचन–नेत्र,। वाढे– बढ गए, उमड गये।

संदर्भ तथा प्रसंग– सीता को प्यास लगने पर लक्ष्मण जल लेने गए हैं और थकी हुई सीता राम से छाया में खडे होकर लक्ष्मण की प्रतीक्षा करने का अनुरोध करती है।

व्याख्या– धूप और गर्म धूल पर चलते, सीता को प्यास लगी तो लक्ष्मण जल लेने गए, सीता बहुत थकी और व्याकुल थी। लेकिन उन्होने स्पष्ट न कहते हुए राम से कहा कि लक्ष्मण जल लेने गए हैं और अभी लडके ही है अतः जल लाने में देर भी हो सकती है। तब तक वह घडी भर छाया में खडे होकर उनकी प्रतीक्षा कर ले। सीता ने कहा कि तब तक वह उनके (राम के) पसीने को पोंछकर उनकी आंचल से हवा करेगी। और गर्म धूल पर चलने से झूलसे ,उनके पैरो को स्वच्छ कर देगी। राम ने समझ लिया कि सीता बहुत थक चुकी है और छाया में कुछ घडी विश्राम करना चाहती है। अतः उन्होने छाया में बैठकर देर तक अपने कांटे निकालै। सीता भी समझ गई कि उन्हें विश्राम देने के लिए ही पति ऐसा कर रहे है। पति का अपने प्रति ऐसा प्रेम देखकर सीता का शरीर पुलकित हो उठा और उनके नेत्रों में प्रेम के आंसू उमड पडे।

महेश कुमार बैरवा (व्याख्याता)

ठाढ़े हैं नवद्रुमडार गहें, धनु काँधे धरें , कर सायकु लै।
बिकटी भृकुटी, बड़री अँखियाँ, अनमोल कपोलन की छबि है॥
तुलसी अस मूरति आनु हिएँ, जड! डारु धौं प्रान निछावरि कै।
श्रम सीकर साँवरि देह लसै, मनो रासि महा तम तारकमै॥

कठिन शब्दार्थ– द्रुम–वृक्ष। डार–डाली। गहे–पकडे,थामे हुए। कांधे–कंधे पर । सायक –बाण। विकटी– तिरछी, धनुष जैसी। भ्रकुटी– भौंहे। बडरी–बडी बडी। कपोलनप की –गालों की । छवि–शोभा। आनि– धारण कर। जड–मूर्ख। डारिहौं– कर डालो। निछावरि– न्यौछावर। स्रम –सीकर– पसीने की बूंदे। लसै– शोभित। रासि–समूह।महातम– महान अंधकार। तारकमै– तारों से भरी।

संदर्भ तथा प्रंसग– इस छंद में श्री राम के श्यामल शरीर की शोभा का अलंकारो के माध्यम से वर्णन किया गया है।

व्याख्या–श्रीराम वन में वृक्ष की डाल को थामे खडे है। उनके कंधे पर धनुष आर हाथ में बाण हे। उनकी भौंहे तिरछी हैं और आंखे बडी बडी हैं । उनके गालों की शोभा का तो मोल ही नहीं लगाया जा सकता । तुलसीदास कहते है–अरे मुर्ख। और सुन्दरताओं की चाह छोडकर श्रीराम की इस श्यामल छवि को हृदय में धारण कर ले। इस पर यदि तू अपने प्राण भी न्यौछावर कर दे तो भी इस सुंदरता का मोल चुकता नहीं होगा। इसे तू अपनेप्राणों से भी बढकर प्रेम करना आरम्भ कर दे। श्रीराम का यह पसीने की बूंदो से झिलमिलाता शरीर देखकर ऐसा लगता है मानों तारें से भरी रात सामने साकार हो गई हो।

बनिता बनी स्यामल गौरके बीच, बिलोकहु, री सखि! मोहि-सी ह्वै।
मगजोगु न कोमल, क्यों चलिहै, सकुचाति मही पदपंकज छ्वै॥
तुलसी सुनि ग्रामबधू बिथकीं, पुलकीं तन, औ चले लोचन च्वै।
सब भाँति मनोहर मोहनरूप अनूप हैं भूपके बालक द्वै॥

कठिन शब्दार्थ:– बनिता –महिला,स्त्री। जोग–योग्य। मही –पृथ्वी । अनूप– उपमारहित। भूप– राजा । बिथकी–रूक गई । मोहित हो गई। अनूप –अनूपम।

व्याख्या–प्रस्तुत अवतरण महाकवि तुलसीदास द्वारा रचित कवितावली के अयोध्याकाण्ड के वन गमन प्रसंग से उद्वत है। इसमें वन मार्ग में नंगे पैर जा रहे श्रीराम , सीता और लक्ष्मण को देखकर कोई ग्रामवधू दूसरी से कह रही हे।

तुलसीदास के वर्णनानुसार कोई ग्रामवधू कहती है कि हे सखी! तुम मेंरी तरह अर्थात् मानवीय संवेदना एवं नारी हृदय की सुकोमल भावना से श्यामल और गौरवर्ण वाले राजकुमारों के बीच चलती हुई उस स्त्री अर्थात् सीता को देखो। ये लोग रास्ता चलने के योग्य नहीं है, फिर भी पैदल ही क्यों चल रहे हे? ये कोमल शरीर वाले हैं। धरती भी इनके चरण कमलो का स्पर्श पाकर संकोच का अनुभव कर रही है। तुलसीदास जी ग्रामवधूओं पर हुई पतिक्रिया का वर्णन करते है कि एक सखी की ये बातें सुनकर ग्रामवधूऐं चलने वालों को देखकर मोहित हो गई और रोमांचित हुई। उनकी आंखों में आंसू आ गये। वे कहने लगीं कि राजा दशरथ के दोनों बालक सब प्रकार से सुन्दर और आकर्षण रूप वाले है। इनकी अन्य काई उपमा नहीं हो सकती ।

महेश कुमार बैरवा (व्याख्याता)

साँवरे-गोरे सलोने सुभायँ, मनोहरताँ जिति मैनु लियो है।
बान-कमान, निषंग कसें, सिर सोहैं जटा, मुनिबेष कियो है॥
संग लिएँ बिधुबैनी बधू, रतिको जेहि रंचक रुपु दियो है।
पायन तौ पनहीं न, पयादेंहि क्यों चलिहैं, सकुचात हियो है॥

कठिन शब्दार्थ – मैन–कामदेव। निषंग– तरकश , तूणीर। बिधू–चन्द्रमा। बैनी–बचन वाली। रति –कामदेव की पत्नी। रंचक–कुछ कम। पनहीं –जूती। पयोंदेहिं–पैदल।

प्रसंग– इसमें कवि ने वर्णन किया है कि ग्रामवधूऐं वनमार्ग में जाते हुए श्रीराम, लक्ष्मण, एवं सीता के सौन्दर्य और उनको पैदल चलते देखकर संकोच को व्यक्त कर रही हे।

व्याख्या – गोस्वामी तुलसीदास के वर्णनानुसार ग्रामवधूऐं आपस में कहती है कि राम लक्ष्मण सांवले और गौर वर्ण के है, उनका स्वभाव सुहावना है। अपने सौन्दर्य से उन्होने मानों कामदेव को भी जीत लिया है। बाण ,धनुष, और तरकश लिए हुए वे अपनी जटाओं के कारण सुन्दर लगते है। उन्होनें मुनियों का सा वेश बना रखा हे। उनके साथ में चन्द्रमा के समान मुख और मधूर बोलने वाली बहू है। जो इतनी सुन्दर है मानो कामदेव की पत्नी रति का सौन्दर्य तो उसके सौन्दर्य के एक छोटे से भाग से बना है। वनमार्ग पर चलते हुए इनके पैरों में जूते नहीं है ,फिर यह कोमल चरणों वाले राजकुमार पैदल ही क्यों चल रहे हे। यह सोच कर हदय में संकोच होता हे।

रानी मैं जानी अयानी महा, पबि-पाहनहू तें कठोर हियो है।
राजहुँ काजु अकाजु न जान्यो, कह्यो तियको जेहिं कान कियो है॥
ऐसी मनोहर मूरति ए, बिछुरें कैसे प्रीतम लोगु जियो है।
आँखिनमें सखि! राखिबे जोगु, इन्हें किमि कै बनबासु दियो है॥

कठिन शब्दार्थ :–अजानी–अज्ञानी। पवि–इन्द्र का अस्त्र,वज्र। पाहन–पत्थर। राजहु–राजा ने भी। काज अकाज– कार्य अकार्य। कहयों– कथन, बात। तिय–पत्नी, ।प्रियतम–प्रितिम। किमि–कैसे, क्यों।

प्रसंगः–श्रीराम को वनमार्ग पर जाते हुए देखकर ग्रामवधूऐं अपनी जो दुःख पूर्ण प्रतिक्रिया व्यक्त करने लगी । इसमें उसी का वर्णन किया गया है।

व्याख्याः– ग्राम वधुओं में से एक कहने लगी कि मुझे तो रानी कैकेयी बहुत अज्ञानी प्रतीत होती हे। उसका हदय तो इन्द्र का अस्त्र ,वज्र और पत्थर से भी कठोर है। राजा दशरथ ने भी नहीं जाना की कौन सा कार्य करने योग्य है, और कौनसा करने योग्य नहीं है। उन्होने भी कमजोर स्वभाव की पत्नी की बात मानकर अर्थात् उसके कहने पर इन्हें वन में भेज दिया है। ऐसी सुन्दर मुर्तियों से बिछुडने पर इनके प्रिय लोग भला कैसे जीवित रहेगें। आशय यह है कि यह बहुत सुन्दर है,जिन्हें ये प्रिय हैं ,वे इनसें अलग होने पर कैसे जीवित रह पायेगें। वे तो बहुत दुःखी होगे। ये सखी ! ये वन भेजने के नहीं ,आंखों में बसा लेने के योग्य है। इन्हें वनवास ही दिया ही क्यों ? इन्हें वनवास जैसा कष्ट दिया ही नहीं जाना चाहिए था।

महेश कुमार बैरवा (व्याख्याता)

सीस जटा, उर- बाहु बिसाल, बिलोचन लाल, तिरीछी सी भौहैं।
तून सरासन-बान धरें तुलसी बन-मारगमें सुठि सोहैं॥
सादर बारहिं बार सुभायँ चितै तुम्ह त्यों हमरो, मनु मोहैं।
पूँछत ग्रामबधू सिय सों, कहौ, साँवरे-से सखि! रावरे को हैं॥

कठिन शब्दार्थ – उर–वक्ष स्थल, हद्‌य। बाहु– भुजा। विलोचन –नेत्र। तून–तूणीर, तरकश। सुभायं –सुन्दर भाव। सरासन–धनुष। सुठि–सुन्दर। रावरे–आपके।

प्रसंगः–वन को जाते हुए राम लक्ष्मण और सीता को देखकर मार्ग की ग्रामवधुऐं अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करती है। और सीता से परिचय पूछती है।

व्याख्या– कोई ग्रामवधू सीता से पूछती है कि जिनके सिर पर जटाऐं है। जिनका वक्षस्थल और भुजाऐं विशाल है, और लाल नेत्र है, तिरछी सी भौंहें है, जो कमर पर तरकश और हाथों में धनुष बाण धारण किए हुए इस वनमार्ग पर चलते हुए सोभायमान लगते है । और जो तुम्हें बार–बार तुम्हें सुन्दर प्रेमभाव से देख रहे है। तथा तुम्हारी ही तरह हमारे मन को भी मोहित कर रहे है। हे सखी! वे सांवले वर्ण के राजकुमार आपके कौन है? यह हमे बतलाओं।

सुनि सुंदर बैन सुधारस-साने सयानी हैं जानकीं जानी भली।
तिरछे करि नैन, दै सैन तिन्हैं समुझाइ कछू मुसुकाइ चली॥
तुलसी तेहि औसर सोहैं सबै अवलोकति लोचनलाहु अलीं।
अनुराग-तड़ागमें भानु उदैं बिगसी मनो मंजुल कंजकलीं

कठिन शब्दार्थ – सुधारस–साने– अमृत से सराबोर। सयानी–चतुर। सैन–भौहों द्वारा संकेत करना । औसर– अवसर। अवलोकती– देखते हुए। लोचनलाहु– नेत्र होने का लाभ। अली– सखी। अनुराग–तडाग– प्रेम रूपी सरोवर। भानु–सूर्य । कंजकली–कमल की कली।

प्रसंग–वनमार्ग में किसी ग्रामवधु ने सीता से राम का परिचय पूछा और सीता ने जिस ढंग से परिचय दिया ,यहां उसी का वर्णन किया गया है

व्याख्या–तुलसीदास वर्णन करते हैं कि उस ग्रामवधू के सुन्दर तथा अमृत के रस से भरे हुए मधुरतम वचनों को सुनकर सीता ने समझ लिया कि यह बडी चतुर तथा सयानी समझदार है। इसलिए सीता ने उसके प्रश्न का उत्तर देने के लिए अपनी आंखो को तिरछा करके कुछ इशारा किया और इशारे में ही उसे समझाते हुए कुछ मुस्कराकर आग्रे बढ गयी। तुलसीदास कहते हैं ि कइस अवसर पर उने सभी की शोभा देखने योग्य थी, अर्थात् इस तरह के मुस्कराहटपूर्ण सांकेतिक उत्तर सेजहां सीता की शोभा हो रही थी, वहीं ग्रामवधू आदि सभी स्त्रीयों की भी शोभा हो रही थी और सब प्रसन्नमुख लग रही थी, उस दृश्य को देखकर कोई कहनेलगी कि हे सखी!इनकी मनोरम रूप छवि देखने से हमे आंखों को धारण करने का लाभ प्राप्त हो गया है। वह दृश्य ऐसा था मानों प्रेम रूपी सरोवर में सूर्य के उदय होने पर सुन्दर मुख रूपी कमल खिल गये हों, अर्थात् सीता तथा ग्रामवधू के मुख कमल अतीव प्रसन्नता एवं प्रेमातिरेक से एकदम खिल गये थे।